''बिहारी के काव्य में श्रृंगार रस'' – एक विस्तृत विश्लेषण

Bihari Ke Kavya Mein Shringar Ras Ek Vistrit Vishleshan

Sarika[1] Dr. Shyama Purohit[2]

[1]Research Scholar, Singhania University, Rajasthan, India

[2]Asst. Prof., N.S.P. College, Bikaner

----------♦----------

संक्षेपिका

हिन्दी साहित्य में रीतिकाल का उदय भक्तिकाल के पतन के पश्चात हुआ रीतिकाल कालगत दृष्टि से पर्यापत उत्कर्ष का युग था। इस युग तक आते–आते भक्ति के स्थान को प्रेम और श्रृंगारिकता ने ग्रहण कर लिया था। धार्मिक पवित्रता नष्ट होती चली गई और राधा – कृष्ण की लीलाओं का रूप नायक– नायिका के भेद रूप में सामने आने लगा। इस काल के कवियों ने श्रृंगार को अधिक महत्व प्रदान किया तथा इसके अन्तर्गत नायिका के नख–शिख, वर्णन, नायिका–भेद आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन प्रस्तुत किया हैं। इस युग में राम और कृष्ण अराध्य देवता के उच्च सिंहासन से उतर कर सामानय रूप में उपस्थित होने लगे थे। इस काल के साहित्य को तीन वर्गो में वर्गीकृत किया गया रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त।

रीतिबद्ध काव्यधारा के अन्तर्गत वे कवि आते है जिन्होने रीतिनिरूपक काव्य लिखे अर्थात जिन्होने रस, अंलकार, छंद नायिका– भेद, नख – शिख वर्णन, गुण आदि काव्यांगो का शस्त्रीय निरूपण कर लक्षण उदाहरण वाले काव्य ग्रंथो की रचना की। इन कवियों में मुख्यतः केशवदास जी का नाम सर्वप्रथम आता है।

रीतिसिद्ध कवियों की परम्परा में उन कवियों को गिना जाता है जिनहोने रीतिग्रंथों की परम्परा का अनुसरण करते हुए लखण ग्रंथों की रचना की है। इनके काव्य ग्रथों ने रीति अपने सिद्ध रूप में देखी जा सकती है अर्थात उनके रीति परितार्थ होती प्रतीत होती है। इन कवियों को रीतिसिद्ध रीति सिद्ध रस या काव्य कवियों की संज्ञा भी दी जाती है इस युग के कवियों में भूषण बिहारी सेनापति, ररस निधि, बेनी आदि आते है।

रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवियों में से बिहारी इस युग के सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते है। इनका जन्म ब्राह्मण कुल कमें बुंदेलखण्ड में ग्वालियर के पास बसुआ नाक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। परन्तु इनके पिता के नाम के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद विद्यमान है। कुछ विद्वान मानते है कि बिहारी के पिता हिन्दी के प्रसिद्ध कवि केशवराय है, परन्तु कुछ इस मत के विपरीत मत रखते है। उनका मानना है कि केशव तो सनाढय ब्राह्मण और बिहारी धरवारी माथुर। यदि ये दोनों पिता–पुत्र होते तो इनका गौत्र भी ऐ जैसा होता। बिहारी सतसई की प्रथम टीका लिखने वाले कवियों के अनुसार बिहारी के पिता का नाम केशवराय ही था परनतु वे हिन्दी के प्रसिद्ध कवि केशव नही है। हिन्दी साहित्य के कवि केशव तथा बिहार के पिता दोनो ही भिन्न'–भिन्न व्यक्ति है।

बिहारी की माता के संदर्भ में हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा विद्वान मौन है। जनश्रुतियों के अनुसार बिहारी को एक भाई व बहन भी थे। उनके अनुसार बिहारी के भाई का विवाह मैनपुरी में हुआ था और बहन का विवाह परशुराम मिश्र के साथ हुआ था। रीतिकाल के प्रसिद्ध आचार्य कुलपित मिश्र बिहारी की

बहन के ही पुत्र है।

बिहारी ने अपनी शिक्षा–दीक्षा ओड छे के निकट गुढौ में प्रसिद्ध नरहरिदास जी से ग्रहण की। बिहारी ने अपने गुरू नरहरिदास की श्चारण में रहते हुए संस्कृत, प्राकृत और ब्रज भाषओं का अभ्यास तथा रीतिग्रंथों का पठन–पाठन किया। अपने गुरू नरहरिदास जी की आज्ञा से बिहारी आगरा गये और वहा उन्होने उर्दू, फारसी के शब्दों का ज्ञान प्राप्त किया ।

बिहारी का विवाह माथुर चौबे लोगो के घराने मथुरा में हुआ था। बिहारी की पत्नी के नाम के संदर्भ में कुछ भी कहना उपलब्ध नही है।, परन्तु यह कहा जाता है कि बिहारी की पत्नी एक कवयित्री थी जिसने अपने जीवन काल में 1400 दोहो की रचना की और उन्हीं 1400 दोहो में से 700 दोहो का चुनाव कर बिहारी सतसई की रचना की गई।

बिहारी भ्रमणशील कवि रहे है तथा उन्होने अनेक राजाओं के आश्रय में रहना स्वीकार किया। बिहारी इन्द्रजीत की राज्य सभा से मुगल शासकों तक के दरबार में उपस्थित होकर अपनी कविताओं से सामाजिकों को आनन्दित किया करते थे। सर्वप्रथम बिहारी को मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार में स्थान प्राप्त हुआ। संवत 1692 में बिहारी का परिचय आमेंर के माहाराजा जयसिंह से हुआ और वे उनके दरबार में रहने लगे। जयसिंह से प्रथम भेंट के समय कावि ने यह दोहा पढ़ा था ।

''चल पाड़ निगुनी गुनी धनु मनि मुतिय माल।
भेट होत जयसाहि सौ भागु चाहियतु भाल।''

बिहारी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में केवल एक ही कृति बिहारी सतसई की रचना की तथा उसी के अन्तर्गत अपने ह्रदय के सम्पूर्ण भावों को समेट कर पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया है। बिहारी ने अन्य अनेक मुक्तको की रचना की होगी परन्तु आज कुछ भी उपलब्ध नही है।

महाकवि बिहारी लगभग 70 वर्ष की आयु में हिन्दी साहित्य के पन्नों पर अपनी मीठी मधुर छाप छोड़ कर मृत्यु को प्राप्त हो गये। महाकवि बिहारी रीतिकालीन कवि थे उनके संबंध में कुछ जानने या समझने के पहले रीति को समझना आवश्यक है। रीति शब्द संस्कृत भाषा की रीड़गतौ धातु से बना है। जिसका अर्थ – पद्धति, प्रणाली, शैली, गति, मार्ग, पंथ, रस्म, रिवाज, नियम, कायदा, ढब, चलन, परिपाटी, प्रशंसा और स्वभव आदि है। इस प्रकार रीति से तात्पर्य ऐसी पद रचना या लेख शैली से है जो ओज, प्रसार व माधुर्य आदि गुणो को उत्पन्न कर कृति में जान डालती है।

रीतिकाल श्रृंगारिक काल था, परन्तु श्रृंगार के साथ–साथ इस काल में कई प्रवृतियां उजागर हुई है जिन्होने पाठकों के मस्तिष्क को प्रीभावित किया है रीतिकालीन कावय को कवियों ने इन्द्रियों की भोग लिप्सा की वासनाओं में डूबो दिया था तथा इन कवियों के श्रृगांर के दोनों पक्षों संयोग–वयोग का सुन्दर चित्रण किया है। इन्होने श्रृंगार के संयोग पक्ष के अन्तर्गत नायक–नायिका के मिलन, क्रीड़ा, हाव बिलास तथा वियोग में उन्हें छोटी–छोटी बातों से चिंतित, भयभीत होते हुए दिखाया गया है।

रीतिकालीन कवियों ने नारी के प्रति भोग की दृष्टि को ही अपनाया है। इन कवियों ने जितने भी काव्य रचे उनमें नारी के नग्न चित्र प्रस्तुत किये अर्थात इन्होने नारी को केवल तृष्णाओ की पूर्ति मात्र का साधन माना है। इन कवियों का ध्यान रारी के दूसरे रूपों जैसे मां, गृहिणी, देवी आदि पर नही गया।

इस काल में रीति प्रधान रचनाएं लिखी गई। काव्य निरूपण संबंधी अनेक लक्षण गंथों का निर्माण हुआ। इन ग्रथों में काव्यांगों का विशद विवेचन हुआ है। अंलकार बाद की प्रमुखता रही। अंलकार को काव्य की आत्मा स्वीकारते हुए अलंकार गंथों के निर्माण किया गया।

रीतिकालीन कवियों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उस युग के अनुकूल ब्रज भाषा का चयन किया। जिससे उनके काव्य की भाषा सामान्य जन की समझ में आ सके। ब्रज भाषा के चयन के साथ–साथ इस काल के कवियों ने मुक्तक शैली के अन्तर्गत काव्य रचना की। इस काल के मुक्तक श्रृंगार प्रधान थे।

रीतिकाल दरबारी कवियों का काल था जिससे इन कवियों को स्वतंत्र रूप से प्रकृति विचलन करने का अवसर प्राप्त नही हुआ, परनतु फिर भी इन कवियों ने प्रकृति चित्रण बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। इन कवियों ने प्रकृति के आलम्बन उद्दीपन दोनों रूपों का वर्णन प्रस्तुत किया है।

हिन्दी साहित्य के कवि बिहारी ने केवल एक ही कृति बिहारी

सतसई की रचना की थी। बिहारी सतसई को समझने से पहले सतसई के अर्थ को समझना आवश्यक है।

सतसई का सामान्य अर्थ सात सौ पद्यो की संख्या से रचित रचना अर्थात सात सौ छंदो का ग्रंथ ही सतसई कहलाता है। सतसई लिखने की परम्परा प्रचीन काल से ही चली आ रही है। बिहारी से पूर्व भी कई कवियों ने संख्या कूलक रचनाओं की रचना की जिनमें से प्राकृत भाषा के महान कवि हाल द्वारा रचि गाथा सप्तशती, कवि गोवर्धनाचार्य द्वारा रिचत आर्यसप्तशती, कवि अमरूक जी की अमरूकशतक, भृतहरि द्वारा रचित नीतिशतक, श्रृंगारशतक और वैराग्यशतक आदि रचना की गई है जोकि प्रारम्भिक संस्कृत सतसईयों की श्रेणी के अन्तर्गत आती है।

संस्कृत सतसईयों के साथ–साथ हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ तुलसीदास और रहीम की सतसईयों से माना जाता है। हिन्दी की सतसईयों के अन्तर्गत कवि तुलसीदास जी द्वारा रचित तुलसी सतसई जिसमें 747 दोहो की रचना की गइ। कवि रहीम द्वारा रचित रहीम सतसई कवि मति राम द्वारा रचित मतिराम सतसई, कवि रस निधि द्वारा रचित रस निधि सतसई वृन्दद्वारा रचित वृन्द सतसई जिसके दोहो की संख्या 705 से 713 तक मान जाती है। समसतसई जो कि कवि राम सहाय दास जी द्वारा रचित है। बंदेलखण्ड की चरखारी रियासत के राजा विक्रम सिंह, द्वारा रचित विक्रम सतसई, सुर्य मल्ल मिश्र जी द्वारा रचित बीर सतसई अथवा कवि बिहारी द्वारा रिचत बिहारी सतसई हिन्दी साहितय की प्रमुख सतसईयों में गिनी जाती है। बिहारी की सतसई पर पूर्वर्ती सतसईयों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। बिहारी ने सतसई में दोहा छंद को महत्व दिया है तथा इसी के अन्तर्गत उनहोने अपने हृदय के भावों को प्रकट किया है इसीलिए उनके दोहो के लिए यह उक्ति खरी उतरती है।

''सतसईया के दोहरे, ज्यो नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर।।''

रीतिकाल के रीतिसिद्ध काव्य धारा के कवि बिहारी श्रृंगारी कवि थे। श्रृंगारिक कवि होते हुए भी उदनके काव्य में भक्ति और नीति से संबंधित दोहे भी मिलते है। कहा जा सकता है कि बिहारी की कृति में श्रृंगार, भक्ति और नीति का समन्वित रूप देखने को मिलता है।

बिहारी ने श्रृंगार वर्णन के अन्तर्गत संयोग व वियोग दोनो का ही वर्णन किया है। संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत नायक–नायिका के रूप सौदर्य और उनकी क्रीड़ओं से संबंधित चित्रण किया गया है तथा कहीं – कहीं उनके प्रेम नैकट्य को व्यकत किया गया है। संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत बिहारी ने संभोग सुख में आनंद की प्राप्ति के आलिगंन, चुंबन, नखक्षत, दन्तक्षत आदि का वर्णन किया है। बिहारी ने जो दनत क्षत का वर्णन किया है उसका उदाहरण द्रष्टव्य है।

''तरिवन–कनकु कपोल दुति बिच बीच ही बिकान।
लाल–लाल चकमति चुनि चौका चीह संगाना।

बिहारी ने अपने श्रृंगार से संबंधित दोहो में मौलिका दिखाई है। उनके दोहो के भाव चाहे पुराने है, परन्तु उन्होने इसमें जो चमक तथा जान डाली है वह नवीनता को धारण किये है।

संयोग श्रृंगार के साथ–साथ बिहारी ने वियोग श्रृंगार का भी सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। व्यथित तीनों ही प्रकार की नायिकाओं प्रवत्स्यत्यपति का,

प्रोषित प्रतिका, आगलपतिका की विरह वेदीना का वर्णन बहुतम ही सहज ढंग से किया है। वियोग के तीनों भेदों का वर्णन के साथ बिहारी ने सतसई के अन्तर्गत बिरह की दसो कामदशाओं अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणाकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि जड़ता और मरणका वर्णन किया है। बिहारी ने कई दशाओं के वर्णन में तो सहदयाता और भावुकता का परिचय दिया है परन्तु अधिकांशतः उनका विरह वर्णन हास्यस्पद प्रतीत होता है क्योकि उनके विरहसंबंधी दोहो में मार्मिकता का अभाव है। संवेदना की गहराई तो बिहारी के मिने–चुने दोहो में ही दिखाई देती है। इस प्रकार बिहारी ने श्रृंगार और वियोग पक्षो का प्रभावशाली एवं अनुभूतिमय चित्रण किया है।

श्रृंगार से श्रांत पथिक भक्ति की और ही दौड़ता है। रीतिकाल में श्रृंगार प्रधान ग्रंथों की रचना विपुल मात्रा में हई है। फिर भी यंत्र–तत्र भक्ति भावना से पूर्ण रचनाएं भी दिखाई पड़ती है यत्रपि भक्ति काल की भक्ति–भावना और रीतिकालीन भक्ति–भावना में बहुत अंतर दिखाई देता है। यह अंतर स्वाभाविकता, गहराई गहनता की दृष्टि से देखा जा सकता है। रीतिकालीन कवि अपनी रूचि परिवर्तन के लिए श्रृंगार सागर की डूबकिया लगाते– लगाते भक्ति की ओर उन्मुख हो

जाया करते थे। बिहारी का कल भी इस भक्ति धारा से अछुता नही रहा है यद्यपि बिहारी ने किसी सम्प्रदाय से विधिवत दीक्षा ग्रहण नहीं की थी और नहीं वे सूर, तुलसीदास, मीराजायसी, आदि भक्तों की तरह पूर्णतः भक्त थे लेकिन फिर भी भक्ति दशर्रन तथ वैराग्य विषयों पर लिखें उनके दोहे उनकी भक्ति–भावना को परिचायक है। बिहारी ने राधा वल्लभ सम्प्रदाय के अनुसार ही भक्ति की है। बिहारी ने इष्ट देव या अराध्य देव श्री कृष्ण ही है। बिहारी सतसई का प्रामि दोहा इसका प्रमाण प्रस्तुत करता है।

''मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की छांई परै, श्याम हरित दुति होय।।''

बिहारी ने अपने दोहो के माध्यम से अपने अराध्य के प्रति माधुर्य, संख्य और दास्य तीनों प्रकार की भक्ति भावना को प्रकट किया है।

बिहारी को लोक पक्ष और लोकनुभव को अपने काव्य में निबंध करने की कुशलता प्राप्त थी। वे एक जागरूक कवि थे। वे अपने आस पास के सामान्य विषयों तथा अनुभवों को अपने दोहो के रूप में प्रस्तुत करने में सिद्ध हस्त थें। बिहारी एक सफल नीति कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं उनका नीति काव्य अनेक विषयों को आत्मसात किये हुए है। नीति संबंधी दोहो में बिहारी का सूक्ष्म नीरिक्षण और लकानुभव स्पष्ट रूप से झलकता हुआ दिखाई देता है। नीति संबंधी दोहो में बिहारी का सूक्ष्म निरीक्षण और लोकनुभव स्पष्ट रूप से झलकता हुआ दिखाई देता है। नीति का अर्थ व्यापक भाव से होता है। जिसमें जीवन की बहुत सी अनुभूतियां आ जाती है यही कारण है कि बिहारी के नीतिपरक दोहो में बहुत कुद आ गया है। संगति का दोष, गुणों का आदर, याचक की हीन भावना, खल से भय की नीति, गुणहीन का सम्मान, नीच का स्वभाव, सत्पुरूष की विनम्रता, धन का अंहकार, असहृदय एवं गुणग्रंहाकता से रहित वयक्तिम का आचरण, याचक की हीन भावना अवसर की पूजा, कपण का स्वभाव, वैभव से बिगड स्वभाव, बड़ो की मर्यादाहीनता, समय काफेर, अपात्र की प्रतिष्ठा, धर्म का संचय, प्रेम की अननयता, पद का लोभ, तुच्द का महत्व अनुपयुक्तव्यक्ति का साथ अदि को अपनी सूक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। बिहारी ने धन के नशे को रखांकित करते हुए कहा है कि –

''कनक–कनक तै सौगुणी मादकता अधिकायै।
वा खाये वौराये जग वा पायै बौराय।।''

बिहारी के सौ ही नीति संबंधी दोहो के कारण बिहारी सफल नीतिकार सिद्ध हुये है। बिहारी सतसई हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन काव्यधारा में अपनी शैली, वस्तु उदान्त और अभिव्यंजना कौशल के आधार पर अपना अलग महत्व रखती है। बिहारी द्वारा रचित इस मुक्तक रचना के अन्तर्गत काव्य के दोनो पक्षों और अभिव्यक्ति पक्ष का समुचित साजंस्य दिखाई देता है।

बिहारी सतसई श्रृगांर प्रधान रचना है। श्रृंगारिक होते हुए भी इसमें भक्ति, नीति और दर्शन का रूप भी देखने को मिल जाता है। परन्तु इस ग्रंथ में प्रधानता केवल श्रृंगार रस की है। बिहारी ने श्रृंगार रस के दोनों पक्षों संयोग पक्ष और वियोग पक्ष का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। श्रृंगार रस और भक्ति रस के साथ उन्होने भाव व्यंजना की अभिव्यक्ति भी की है, जिसमें उनहोने हाववर्णन और अनुभाव वर्णनप को प्रमुखता प्रधान कर उसको सहज यप में वर्णन प्रस्तुत किया है बिहारी का वर्णन भी किया है। जिससे यह स्पष्ट हो जात है कि बिहारी हाव– विधान और अनुभाव व्यंजना के धनी कवि थे।

बिहारी ने अनुभूति पक्ष के अन्तर्गत सौदर्य विधान को महत्व दिया है। सौदर्य बिधान में उन्होने नारी सौदर्य और प्रकृति सौदर्य को प्रमुखता प्रदान की है। नारी सौदर्य का वर्णन करते हुए लिखते है। कि

''छाले परिबै कै डरनु सखि ना हाथ छुवाई।
झझकत हिये गुलाब के झपैयत झंवा पाई।।''

बिहारी ने बिहारी सतसई में नारी के जो चित्र खींचे है। उसमें नारी के बाह्मा सौदर्य का चित्रण ही नही किया है अपितु नारी के मन के सौदर्य का भी वर्णन किया है।

बिहारी दरबारी कवि थे। जिससे उन्हे स्वतंत्र रूप से प्रकृति का अवलोकन करने का अवकाश नही मिला परन्तु फिर भी बिहारी ने अपने काव्य में प्रकृति सौदर्य के जो चित्र प्रस्तुत किये है, वह बहुत ही आकर्षक है। प्रकृति चित्रण के अन्तर्गत बिहारी ने छः ऋतुओं बसन्तण ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशर का वर्णन किया है। इन छः ऋतुओं के साथ–साथ बिहारी ने प्रकृती का उद्दीपन, आलम्बन और आंलकारिक रूप में भी वर्णन प्रस्तुत किया है। बिहारी की प्रकृति के उद्दीपन

रूप का चित्रण संयोग और वियोग दोनो ही पक्षो में किया है संयोगानुभूतियों के उद्दीपन के रूप चित्रण में प्रकृति का सुन्दी वेश उसकी अनुभूतियों को ओर अधिक आकर्षक बनाता है। जो निम्न प्रकार से है।

'' धाम धारीक निवारिये, कलित, ललित अतिपुंज।
जमुना तीर तमाल तरू मिलित, मालती, कुंज।।''

बिहारी ने प्रकृति के वियोग श्रृंगार में उद्दीपन रूप में प्रकृति व संवेदक दोनों ही रूपों का वर्णन मार्मिकता के साथ किया है।

प्रकृति के उद्दीपन रूप वर्णन के साथ–साथ बिहारी ने प्रकृति के आलम्बन रूप का वर्णन भी बहुत ही सहज ढंग से किया हैं। प्रकृति के आलम्बन रूप वर्णन में बिहारी ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है जिससे उनका प्रकृति चित्रण पाठक को अपनी ओर आकर्षित करता है।

''धन घेरा छुटिगो हरषि चली चहूँ दिसि राह।
कियौ सुचै नो आय जग, सरद सूर नरनाह।।''

बिहारी रससिद्ध कवि थे उनका कला बिधान रीतिकाव्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उन्हे अंलकारवादी तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु प्रकृति निरूपण में उन्होने प्रकृति के क्षेत्र से ही अधिक उपमान लिए है अर्थात अन्य कवियों की भांति बिहारी ने प्रकृति को उपमानों के द्वारा प्रस्तुत किया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि बिहारी ने प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन वर्णन के साथ–साथ प्रकृति का अंलकारिक रूप में भी चित्रित किया है। उदाहरणार्थ

''सोहत ओढे पीत पट, स्याम सलौने गात।
मानौ नीलमणि सैल पर आतप रपयौ प्रभात।।''

बिहारी मुक्तक के गम्भीर कवि है, जिन्हे लोकपक्ष और शास्त्र का ज्ञान था। वे एक निगुर्ण कवि थे जो समय और स्थिति के अनुसार भाव और कल्पना में सामंजस्य कर लेते थे। बिहारी कुल 18 शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त थ जिममें भक्ति विचार, नीति विज्ञान, राजनीति, ज्योतिषी, चिकित्सा, गणित, अर्थशास्त्र प्रकृति ज्ञाान, मनोविज्ञान आदि विषय आते है।

बिहारी उस समय के समाज से परिचित थे उस समय विशेष की सभी प्रथाओं का भलीभांति जानते थे। बिहारी को समाज की प्रथाओं का ज्ञान प्राप्त था। इसका परिचय देते हुए वे अपने दोहो में वर्णन करते है।

''दियौं हियौ संग हाथ के हथलेवे ही हाथ।

अतः कहा जा सकता है कि बिहारी श्रृंगारिक कवि के साथ–साथ बहुज्ञाता भी थे। बिहारी अपने युग के सर्वाधिक कलात्मक सौदर्य के कवि है जितना उनका भाव प्ख सबल औा समर्थ है। कला पक्ष भी रूचिकर और आनन्दवर्धक है।

बिहारी की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है उन्होने भाषा को सिद्ध रूप में सारर्भित बनाकर प्रस्तुत किया है। ब्रज भाषा के साथ–साथ उनकी सतसई में सस्कृत के तद्भव और तत्सम, प्राकृत एवं अपभ्रंश के शब्द, अरबी फारसी के शब्द, देशज शब्द मुहावरो और लोकोक्तियों का वर्णन भी किया गया है। बिहारी एक मुक्तकार थे तथा कोई भी सफल मुक्तकार भाषा की समास शक्ति द्वारा कम से कम शब्दों में विपुल भाव दृश्यों की व्यंजना करता है, सही मायने में बिहारी सफल मुक्तकार कवि है जिनकी भाषा में लोक प्रचलित मुहावरे व लोकोक्तियों का समावेश दिशाई देता है। बड़े–बड़े सागरूपों के द्वारा एक दोहे की दृष्टि से निम्न दोहो विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

''दृग उरझत, टूटत कुटम्ब जुतर–चतुर चित प्रीति।
परिति गांठ दुर्जन हिर्य, उर्द नई यह नीति।।''

अतः कहा जा सकता है कि भाषा के माध्यम से बिहारी ने मनोरम लघु दृश्यों खण्डों का चयन व्यंजना सौष्ठव, वयंग्य बिधान भाषा की संगीतात्मकता आदि विशेषताओं का दर्शन करवाया है। अंलकार समप्राय के आचार्यो ने अंलकार को ही काव्य की आत्मा माना है। काव्य के अभिव्यजंना कौशल के निर्माण में अंलकारों की महत्वपुर्ण भूमिका रही है। काव्य में चमत्कार लाने हेतु कविगण अंलकारों का सहारा लेते है। बिहारी समर्थ कवि है, जिन्होने अपने एक–एक दोहे में भावपूर्ण अंलकारों का प्रयोग किया है। बिहारी के अंलकारों के प्रयोग की सबसे महत्वपूर्णन वात यह है कि दोहो के माध्यम से उन्होने अने अंलकारों का सफल प्रयोग किया है। मुख्यतः बिहारी सतसई में श्लेष, यमक, रूपक, उपमा, अश्योक्ति, उत्प्रेक्षा, संदेह तथा विरोधाभास अंलकारों की अधिकता दिखाई देती है। बिहारी सतसई के अन्तर्गत आए उत्प्रेक्षा व अनुप्रास का उदाहरण क्रमशः द्रष्टव्य है।

''सोहत ओढे पीत पर श्याम सलौने गात।

मानो नीलमणि सैल पर आपत परयो प्रभात।।''
''कहत, नटत, रीझतण खीझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरै मौन में करत है नैनन ही सौ बात।।''

छंद भावों की व्यंजना में काफी सहायक होते है। कवि अपने भावों को अलग–अलग छंदो के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। जिसके लिए भाषा के विविध उपदानों का सुक्ष्म अनुसंधान अनिवार्य है। बिहारी ने अपनी कृति बिहारी सतसई के लिए दोहा छंद का प्रयोग किया है। सतसई में कही कही पर सौरण छंद का प्रयोग भी दिखाई देता है। रीतिकाल के अन्य कवियों ने तो छप्पयसवैया, कविन्त जैसे बड़े छंदो के माध्यम से नायक–नायिका की रासलीला का चित्रण किया है, किन्तु बिहारी ने अपने समग्र भावों को दोहा जैसे छोटे छंद में ही पिरोया है और इसी दोहा छंद के माध्यम से अर्थ भाव तथा सौदर्य की अपूर्व प्रतिष्ठा की है। निपम्नलिखित दोहे में भाव मुद्राएं व प्रमक्रीड़ाएं एक साथ व्यजित हुई है।

''बतरस लालच लाल की मुरली धरि लकाये।
सौह कहे मौहनी हंसे, देन कहे नटि जाये।।''

महाकवि बिहारी एक उत्कृष्ट कोटि के कवि होने के साथ एक अच्छे चित्रकार भी थे तथा उनकी यह विशेषता उनके दोहो में बिम्बों के माध्यम से माने आयी है। बिहारी सतसई में बिहारी ने सभी बिम्बो जैसे दृश्य बिम्ब, संवेद्य बिम्ब, बौद्धिक बिम्ब अंलकत बिम्ब आदि का वर्णन किया है। बिहारी को जितनी सफलता अंलकत बिम्बो और संवेद्य बिम्बों में प्राप्त नही हुई। इनके वस्तु वस्तु बिम्बों में संवेदना का अभाव है, परन्तु फिर भी बिहारी सतसई में जिन बिम्बो का वर्णन हुआ है। वह आकर्षक है। बिहारी ने अपनी प्रतिभा के बल पर ऐसे ऐसे बिम्बो को प्रस्तुत किया है कि अनेक बार पाठक स्मिय विगुग्ध होकर कवि के कौशल को देखता रह जाता है। रीतिकालीन कवियों में सबसे अधिक आकर्षक बिम्ब यदि प्रस्तुत किये है, तो वे केवल रीतिसिद्ध कवि बिहारी ने ही चित्रित किये है।

अतः बिहारी का काव्य सभी मानदण्डों में उत्कर्ष काव्य है बिहारी की सतसई लक्षणमूलक ध्वनि के साथ–साथ समस्त शिल्पगत उपदानों की दृष्टि से एक आदर्श काव्य ग्रंथ है जिसमें अंलकार, रस, छंद, बिम्ब, ध्वनि भाषा का मूल्यांकन, भक्ति नीति और श्रृंगार आदि सभी श्रेष्ठता के साथ व्यक्त हुए है। बिहारी के द्वारा रचित कृति बिहारी सतसई की सभी समीक्षकों ने भूरी–भूरी प्रशंसा की है। यही कारण है कि बिहारी का स्थान समूचे हिन्दी साहित्य में शिखरता को धारण किये हुए है।

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– उमेश शास्त्री, हजापरी लाल शर्मा।

2. बिहारी दिग्दर्शन – प्रो0 रामकुमार वर्मा

3. संक्षिप्त बिहारी – डॉ0 संसार चन्द

4. बिहारी सतसई – डॉ.0 हरिचरण शर्मा

5. रीतिरस तंरगिणी – डॉ0 वल किशोर श्रीवास्तव

6. कविवर बिहारी लाल और उसका युग– डॉ0 रणधीर सिंह

7. हिन्दी काव्य में श्रृंगांर परम्परा और महाकवि बिहारी– डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त

8. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा

9. बिहारी सतसई – डॉ0 नेमीचन्द जैन

10. काव्यांग विवेचन – डा लग्मी नाराण नन्दवाना प्रेमवती शर्मा

11. पंडित पदम सिंह शर्मा– बिहारी सतसई

12. डॉ0 किरण कुमारी गुप्तः बिहारी सम्पादक – डॉ0 ओम प्रकाश

13. बिहारी सतसई का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ0 उर्मिला नाटीला

14. हिन्दी काव्य में श्रृंगार परम्परा – डॉ गणपित चन्द्रगुप्त

15. बिहारी सतसई वैज्ञानकि समीक्षा – डॉ0 गणपति चन्द्र गुप्त

16. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – डॉ0 द्वारिका

प्रसाद सक्सेना

17. रीतिकाव्य के स्त्रोत – डॉ0 रामजी मिश्र

18. बिहारी भूतिका – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

19. बिहारी का नया मूल्याकंन – डॉ0 बच्चन सिंह

20. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

21. हिन्दी कामसूत्र – श्री देवददत शास्त्री

22. श्रृंगार रस भावना और विश्लेषण (भरत में पण्डित जगन्नाथ तक) रमाशंकर जैतली।

23. सौंदर्य बोध का मनोविज्ञानः डॉ0 मफत लाला पटेल।

24. चिन्तामणि भाग एक– आचार्य राम चन्द्र शुक्ल

25. डॉ0 भगवत्स्वरूप– मिश्र बिहारी का नीति वर्णन लेख सम्पादक – डॉ0 ओम प्रकाश : बिहारी

26. बिहारी मीमांसा – डॉ0 रामसागर त्रिपाठी

27. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 घातक एवं प्रो0 राम कुमार वर्मा

28. मतिराम ग्रंथावली

29. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 घातक एवं प्रो0 राम कुमार वर्मा

30. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र

31. सहित्य निबंध – डॉ0 गणपित मिश्र

32. हिन्दी भाषा एवं साहित्य – डॉ0 बेकंट शर्मा

33. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ0 चातक

34. बिहारी – डॉ ओमप्रकाश द्वारा समपादित – डॉ0 रधीर

35. डॉ0 विजपेन्द्र स्नातक : बिहारी सम्पाक : ओम प्रकारश

36. बिहारी सतसई का लुलनात्मक आध्ययन – पंडित पदम सिंह

37. बिहारी की वाग्विभूति – पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

38. काव्य प्रकाश : प्रथम उल्लास आचार्य मम्कर

39. काव्यात्मक बिम्बः अखोरी ब्रजनंदन सहाय

40. बिहारी की काव्य – सृष्टि – डॉ जय प्रकाश

41. बिहारी

42. दशरूपक – धनंजय

43. काव्य प्रदीप

44. अभिज्ञान शकुन्तलम् – कविदास

45. डॉ0 कीरण कुमारीह गुप्तः बिहारी – सम्पादक डॉ0 ओम प्रकाश

46. बिहारी सतसई – डॉ0 देवेन्द्र शर्मा

47. हिन्दी साहित्य की भूतिका – डॉ.0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

48. कूक्टनीमतम् – दामोदर गुप्त

49. अभिाान शकुनतलम् – प्रथम अंक

50. शिव के आश्रम का वर्णन – व्याघ सम्भव

51. भ्रमर गीत सार – सं0 आचार्य राम चन्द्र शुक्ल

52. विक्रमांक देव चरित – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र कृति ''बिहारी''